विचार बिन्दु

फल की अभिलाषा छोड़कर कर्म करने वाला मनुष्य ही मोक्ष प्राप्त करता है। –गीता

मेरा देश बदल रहा है!

(इसे महज़ एक राजनीतिक नारा न समझें!)

मैं ने अपने बहुत सारे लेखों में देश की दुरवस्था का ज़िक्र किया है। 1947 में देश की आज़ादी के बाद हमने जो सपने संजोये थे, उनमें से बहुत सारे न केवल पूरे होते-होते रह गए, बहुत सारे मामलों में हम ऐसी राहों पर भी चलने लगे जो हमें उन सपनों से दूर ले जाने वाली हैं। बहुत सारी ऐसी बातों की मैंने बार-बार चर्चा की है जो हमें व्यथित करती हैं। मैं स्वीकार करता हूं कि मेरा अपना राजनीतिक सोच है लेकिन उसे लेकर मैं लज्जित नहीं हूं। मुझे यह स्वीकार करने में भी कोई संकोच नहीं है कि बहुत बार राजनीतिक चश्मे हमें चीज़ों को उनके असली रंग में देखने से वंचित कर देते हैं। हम सब के अपने-अपने पूर्वाग्रह होते हैं और उनके चलते हम चीज़ों और स्थितियों को अपनी-अपनी तरह से देखते हैं। एक स्थूल उदाहरण लें कि बहुत सारे लोगों के लिए 2014 से पहले देश में कुछ हुआ ही नहीं था, और 2014 के बाद से देश में स्वर्ण युग आ गया है।

इसके विपरीत बहुत सारे लोगों के लिए देश में जो कुछ भी हुआ 2014 तक ही हुआ और उसके बाद देश एकदम गर्त में चला गया है। कहने की ज़रूरत नहीं कि ये दोनों ही बातें अतिशयोक्ति पूर्ण हैं। 1947 से अब तक की देश की यात्रा मिली-जुली रही है। इसके अलावा, यह भी एक हक़ीक़त है कि एक ही बात को लेकर लोगों के नज़रिये भिन्न-भिन्न होते हैं। अभी दो दिन पहले ही मैं अपने एक मित्र से बात कर रहा था। वे बहुत पुरज़ोर तरीके वर्तमान सरकार द्वारा की गई नोटबंदी की तारीफ़ कर रहे थे और मैं उनसे क़तई सहमत नहीं था।

यह सारी भूमिका इस बात के लिए कि जहां हम अपने देश की बहुत सारी बातों से असंतोष ज़ाहिर करते हैं, वहीं इस बात को भी देखा और सराहा जाना चाहिए कि हमारे इसी देश में बहुत कुछ अच्छा और सार्थक भी हो रहा है। इधर काफी दिनों से हमारे यहां टेलीविज़न के बहुत सारे चैनलों पर आ रहे रियलिटी आधारित कुछ कार्यक्रमों को देखकर मेरा यह सोच और मज़बूत हुआ है। इस तरह के कार्यक्रमों में कभी बच्चे, किशोर, युवा और यहां तक कि प्रौढ़ बल्कि वृद्ध भी अपनी विभिन्न प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हैं। कोई गाता है, कोई नाचता है और कोई किसी अन्य तरह की अपनी दक्षता का प्रदर्शन करता है। कहीं अपनी स्मृति के द्वारा प्रतिभागी हमें चमत्कृत करते हैं तो कहीं किसी भी नए प्रकार की सर्जनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन कर वे हमारी सराहना प्राप्त करते हैं। इधर दो कार्यक्रम ख़ास तौर पर मुझे आकर्षित कर रहे हैं। एक कार्यक्रम में विभिन्न आयु वर्ग की गृहिणियां और पुरुष भी, अपनी पाक कला का प्रदर्शन कर रहे हैं तो उसी चैनल के एक अन्य कार्यक्रम में समाज के अलग अलग तबकों के लोग अपने अभिनव उपक्रमों का परिचय देकर उनके लिए वित्तीय संसाधन प्राप्त कर रहे हैं। इन दोनों कार्यक्रमों को देखते हुए मुझे अपने आस-पास के भी ऐसे अनेक लोगों की याद आई जो अपनी राह बनाकर उस पर कामयाबी की इमारतें खड़ी कर रहे हैं।

हमारे यहां बेरोज़गारी की बहुत चर्चा होती है। मैंने बार-बार यह बात कही है कि रोज़गार का मतलब केवल सरकारी नौकरी ही नहीं होता है, हालांकि हमारे अधिसंख्य युवा रोज़गार के नाम पर सरकारी नौकरी ही चाहते हैं और राजनीतिक दल भी ख़ास तौर पर चुनाव के समय पर अपने वादों के द्वारा उनके इसी सपने को खाद पानी देते हैं। यह अलग बात है कि बाद में अपने वादों को जुमला कहकर पलट जाने में भी उन्हें कोई झिझक नहीं होती है। मूल बात यह कि हमारे विशाल देश में काम करने के अनगिनत अवसर हैं। और इससे भी बड़ी बात यह कि हमारे ही चारों तरफ ऐसे अनेक लोग हैं जो आगे बढ़कर इन अवसरों का लाभ उठा रहे हैं। न केवल लाभ उठा रहे हैं, ख़ुद नए अवसरों का भी सृजन कर रहे हैं। बहुत सारे ऐसे लोग इन कार्यक्रमों में सामने आते हैं जो अच्छी खासी, बहुत बार विदेशों की भी, अपनी नौकरियां छोड़ कर अपना कोई उद्यम शुरू करते हैं और उसमें बहुत तेज़ी से सफल होते हैं। वे भी कोई सरकारी या ग़ैर सरकारी नौकरी करते रह सकते थे। लेकिन वे रिस्क लेते हैं और कामयाबी के नए शिखरों तक पहुंचते हैं। ऐसे लोग जो कल तक किसी के अधीन नौकरी कर रहे थे आज अनेकों को नौकरी देने वाले बन चुके हैं। इन कार्यक्रमों में हमारा साक्षात्कार जिन लोगों से होता है वे सारे के सारे न तो बहुत पढ़े-लिखे हैं और न ही खानदानी अमीर। बेशक वहां उच्च शिक्षित भी हैं और धनी भी। लेकिन सब ऐसे नहीं हैं। मतलब सपना कोई भी देख सकता है और उसे साकार भी कर सकता है। पहली ज़रूरत होती है सपना देखने की। अगर आप सपना देखने की भी ज़हमत न उठाएं तो फिर करते रहें सरकारी नौकरी का इंतज़ार। तलाश करते रहें किसी पेपर आउट करवाने वाले को। लेकर घूमते रहें रिश्वत की थैलियां। और यह सब करते-करते नौकरी पाने की उम्र के पार निकल जाएं। और अगर आपकी आंखों में सपना है और आपके दिल में उस सपने को पूरा करने का जज़्बा है तो मारिये गोली सरकारी नौकरी को। देखिये अपने चारों तरफ।

> **इन सब के बीच अब एक नई पीढ़ी ऐसी उभर रही है जो जिन्हें काम की ज़रूरत है और जो काम करना चाहते हैं उनके बीच पुल बन रही है। बहुत सारे नए स्टार्ट अप ऐसे आ रहे हैं जो काम करने वालों को काम और सेवा चाहने वालों को सेवा दे रहे हैं। यह एक नया उभरता हुआ भारत है।**

कितना सारा काम पड़ा है करने को। असंख्य अवसर हैं जिनको आप लपक सकते हैं। इन अवसरों की कोई गिनती, कोई सीमा नहीं है। आप ख़ुद अवसर पैदा कर सकते हैं। हां, अगर आप इस राह पर चलना चाहते हैं तो आपको मेहनत भरपूर करनी पड़ेगी। केवल मेहनत ही नहीं, काम में पूरी ईमानदारी भी बरतनी होगी। आप कुछ लोगों को कुछ समय के लिए मूर्ख बना सकते हैं, आप खुश हो सकते हैं कि ऐसा करके आपने खासा मुनाफा कमा लिया। लेकिन बेईमानी का यह धंधा लम्बे समय तक नहीं चलने वाला है। बहुत सारे उपक्रम इन्हीं वजहों से भी नाकामयाब हुए हैं कि उन्हें संचालित करने वालों की नीयत में खोट था।

असल में, मुझे लगता है कि आज़ादी के बाद हम अपने देश में लोगों में काम के प्रति सम्मान का भाव पैदा कर पाने में नाकामयाब रहे हैं। अच्छा होता अगर हम अपने नागरिकों में यह भाव स्थापित कर पाए होते कि कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता है, और यह कि हर काम को आनंद लेकर तथा निष्ठा से किया जाना चाहिए। हममें से अधिकांश के लिए हर काम एक बोझ, ऊब पैदा करने वाला और खून चूसने वाला होता है। हम काम से जुड़े लाभ तो लेना चाहते हैं लेकिन जितना काम हमसे अपेक्षित होता है उतना करने से बचने का हर सम्भव प्रयास करते हैं।

सरकारी दफ्तरों की बात तो छोड़िये, आप किसी दुकान पर भी जाएं तो आपको बहुत बार लगेगा कि दुकानदार आपको एक मुसीबत की तरह देख रहा है। उसे अपना माल बेचने में भी बहुत ज़ोर आता है। अगर आप किसी की सेवा लेते हैं, किसी नल ठीक करने वाले की, किसी बिजली ठीक करने वाले की, किसी टेलर मास्टर की, किसी सुथार की, किसी मिस्त्री की या किसी भी और की तो आप पाएंगे न तो वह समय का पाबंद है और न काम की गुणवत्ता की उसे कोई चिंता है।

उसे उसके काम का समुचित पारिश्रमिक मिलना चाहिए, लेकिन इस मामले में भी वह बहुत साफ़-सुथरा नहीं है। उसकी मंशा यही रहती है कि कम से कम काम करे और ज़्यादा से ज़्यादा पैसा ले ले। जो लोग ऐसे नहीं हैं वे तेज़ी से लोकप्रिय होते हैं उनके पास काम की कमी नहीं रहती है, लेकिन जो ऐसे नहीं हैं वे इस बात का रोना रोते रहते हैं कि लोग उनसे काम नहीं करवाते हैं।

इन सब के बीच अब एक नई पीढ़ी ऐसी उभर रही है जो जिन्हें काम की ज़रूरत है और जो काम करना चाहते हैं उनके बीच पुल बन रही है। बहुत सारे नए स्टार्ट अप ऐसे आ रहे हैं जो काम करने वालों को काम और सेवा चाहने वालों को सेवा दे रहे हैं। यह एक नया उभरता हुआ भारत है।

जिस अन्य कार्यक्रम की मैंने चर्चा की उसमें सामान्य गृहिणियां और पुरुष भी अपनी पाक कला के जुनून के दम पर हमें अपने दांतों तले उंगलियां दबाने को मज़बूर कर रहे हैं। ये वे स्त्रियां और पुरुष हैं जिन्होंने अपने शौक को पाला-पोसा है और अपनी तमाम व्यस्तताओं के बीच उस शौक को परवान चढ़ाते हुए ऐसे करिश्मे किये हैं कि हम उन्हें पाक कला के शीर्षस्थ व्यक्तित्व भी उनके काम को देखकर मुग्ध हो रहे हैं। इस कार्यक्रम में एक लगभग अस्सी वर्षीया गृहिणी भी थीं जिनका होना यह दर्शाता है कि अपने शौक को किसी भी उम्र में पाला-पोसा जा सकता है। कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए अगर इन्हीं में से कुछ कल को खान-पान की दुनिया का बड़ा नाम बन कर उभरें। और तब उस नाम के साथ नामा भी आएगा, यह कहना अनावश्यक है।

तो तमाम निराशाओं और हताशाओं के बीच, बेरोज़गारी की व्यथा कथाओं के बीच हमारे ही समाज में उद्यमी, मेहनती, नवाचार प्रेमी लोगों का एक नया वर्ग भी बहुत तेज़ी से उभर रहा है जो न केवल अपने जीवन को बेहतर बना रहा है, अपने आस-पास भी आशा-उल्लास और उत्साह का माहौल रच रहा है।

यह है हमारा नया भारत।हम सब यही चाहेंगे कि यह नया भारत खूब फले फूले।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

अजमेर में उर्स मेला–महफिल-ए- कव्वाली

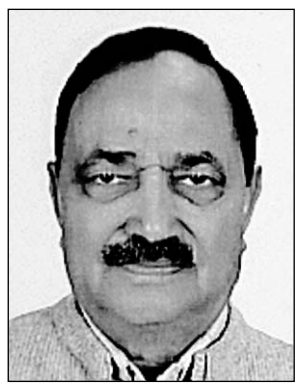

देवी सिंह नरूका

हिन्दी के आदि कवि अमीर खुसरो (सन् 1253–1325 ई.) के समय में सूफ़ी संतों की दरगाह एवं खानशाह (इबादत का स्थान) में कव्वाली अधिक लोकप्रिय हुई। अपने अंतिम समय में अमीर खुसरो ने सबसे बड़े बेटे गयासुद्दीन को बुलाकर नसीहत दी, "अगर हम तुर्कों को हिंद में रहना है और सदा के लिए यहीं बसना है तो सबसे पहले हमें यहां के लोगों के दिलों में बसना होगा, और दिलों में बसने के लिए सबसे पहले ज़रूरत है इनकी ज़ुबान में इनसे बातें करना, इनकें दिलों की बातों को शायरी में बांधना, तभी बंध पायेंगे हम इनसे।"

करीब एक हजार वर्ष पहले कव्वाली का प्रारंभ माना जाता है। कव्वाली शब्द 'कौल' से बना है जिसका अर्थ है बोल अथवा संदेश। पहले कव्वाली सूफी संतों और भक्तों की बैठक में गायी जाती थी किन्तु भारत के देव मन्दिरों में भजन गाने की प्रणाली से प्रभावित होकर कालांतर में साज-बाज के साथ गायी जाने लगी। मान्यता है कि अजमेर में ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती, हसन की दरगाह से ही कव्वाली गाने की वर्तमान प्रणाली का श्रीगणेश हुआ।

अजमेर मे ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में नियमित रूप से विभिन्न समय पर चार बार प्रतिदिन कव्वाली गायी जाती है। दरगाह की खास अथवा शाही चौकी के कव्वाल असरार हुसैन ने बताया कि उनका खानदान सात पीढ़ियों से गरीब नवाज के दरबार में कव्वाली पेश करता रहा है। यहां पर उनका पद मौरूसी (वंश परम्परागत) है। असरार हुसैन और उनके साथियों को मई, 1978 में दिल्ली के अशोका होटल में आयोजित अखिल भारतीय कव्वाली समारोह में चार हजार रूपये, स्वर्ण पदक और शाल भेंट कर तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा सम्मानित किया गया था। आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्रों पर भी वह अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुके हैं।

गरीब नवाज का आस्ताना बंद होते समय रात्रि को और उर्स मेले के अवसर पर कव्वाली की महफिल के शुरू में और आखिर में शाही चौकी के कव्वाल ही कव्वाली पेश करते हैं। असरार हुसैन ने बताया कि सन् 1965 और 1971 में भारत पाक युद्ध के समय ब्लैक आउट के समय भी वह अंधेरे में रास्ता ढूंढते हुए दरगाह शरीफ जाते और कव्वाली पेश कर रोजाना गरीब नवाज के आस्ताने में हाजरी देते थे।

फारसी और उर्दू के अलावा हिन्दुस्तानी और बृज भाषा में भी कव्वालियों की रचना की गयी है जो समय-समय पर गरीब नवाज के आस्ताने में और कव्वाली की महफिलों में गायी जाती हैं। उर्स मेले के अवसर पर रात के 11 बजे से सुबह 4 बजे तक दरगाह दीवान की सदारत में कव्वाली की महफिल होती है। एक के बारद एक मशहूर कव्वाल अपने कलाम पेश कर अकीदत के फूल पेश करते हैं। दिल को छूने वाले कव्वाली के बोल भक्तों को सज्जादानशीन अथवा दरगाह दीवान को रूपये भेंट करने को प्रेरित करते हैं। यह रूपये चौबदार द्वारा तुरन्त कव्वाल तक पहुँचा दिये जाते हैं। गैरूवां वस्त्र पहने, साफा बांध और चाँदी की छड़ियो के सहारे तनी छतरगिरी के नीचे बैठे सज्जादानशीन का रूतबा किसी शहशाह से कम नही होता। कव्वाली का एक नमूना पेश है:–

''कब लग हुई ए करम (कृपा) मोरे ख्वाजा,
बीतो जाय जन्म मोरे ख्वाजा।
मैं क्या जानू दीन धरम को,
हमरे तो दीन धर्म तुम ख्वाजा।
कब लग हुई ए करम मोरे ख्वाजा,
आन पड़ी हूं तुमरी शरण में,
राखों हमरी शरम मोरे ख्वाजा।
कब लग हुई एक करम मोरे ख्वाजा।।''

बादशाह जहांगीर सन् 1613 से 1616 ई तक तीन वर्ष तक अजमेर में रहे। अपनी जीवनी तुजुके 'जहांगीरी' में लिखा है, 'ह्वारविवार की रात को ख्वाजा बुजुर्गवार का उर्स था और मैं उनके रोजे मुतबर्रिक पर गया और वहां पर आधी रात तक रहा। खादिमों और सूफियों को वज्द हो गया मैंने अपने हाथ से फकीरों को और खादिमों को दौलत बख्शी। कुल खर्च 6 हजार रूपये नकद 100 कुर्ते और मोतियों, अम्बर व मूँगों की 70 मालाओं का हुआ।''

कव्वाली के गायन के समय वज्द अथवा आनन्दातिरेक से मृत्यु का भी उल्लेख मिलता है। सन् 1237 की घटना है जब सूफी संत हजरत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को कव्वाली की महफिल में वज्द (हाल) आ गया। उस समय दिल्ली में शेख अली सिजिस्तानी की दरगाह में कव्वाल पार्टी शेख अहमद जाम के फारसी कसीदे की निम्नलिखित पंक्तियां गा रही थी।

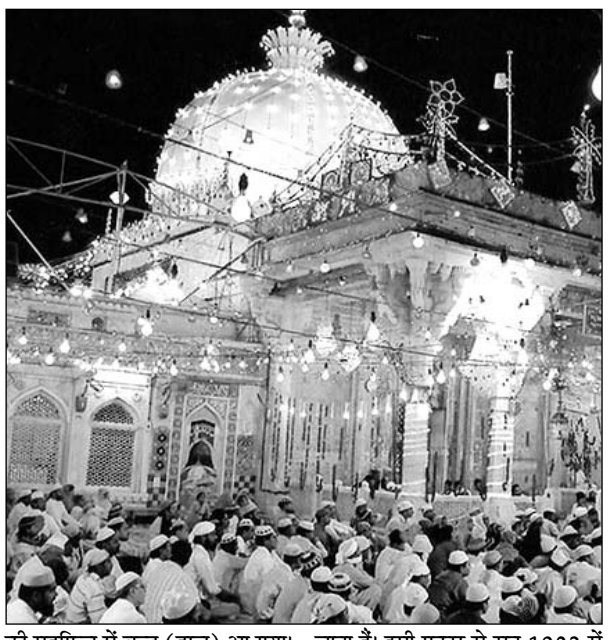

''कुश्तगान-ए-खंजर-ए-तस्लीम रा,
हर जमां अज गेब जॉन-ए-दिग्स्त।''

अर्थात् ईश्वरीय प्रेम की आध्यात्मिक तलवार से आहत हुए लोगो में हर क्षण नये जीवन का संचार होता है।

हजरत कुतुबद्दीन बख्तियार काकी तीन दिन व तीन रात वज्द की स्थिति में रहे और कव्वाल पार्टी नमाज के समय के अतिरिक्त उपरोक्त पंक्तियां बार बार दोहराती रही। इसी स्थिति में वह अल्लाह के प्रेम में शहीद हो गये अत: इन्हें 'शहीद-ए-मौहब्बत' भी कहा जाता है। इसी प्रकार से सन् 1902 में इलाहबाद के सूफी मौलाना मौहम्मद हुसैन का अजमेर में ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में 'महफिल -ए-कव्वाली' के दौरान ही इंतकाल हो गया। उस समय कव्वाल पार्टी यह पंक्तियां गा रही थी।

''गुप्त कुद्दासी फकीर-ए-दर फना-ओ-दर बका,
खुद-ब-खुद आजाद बूदी खुद गिरफ्तार आमदी।''

अर्थात् दरवेश कुद्दासी ने अर्ज किया है कि इस जीवन चक्र में आत्मा स्वयं अपनी इच्छा से शरीर में प्रवेश करती है और अपनी इच्छा से ही इससे मुक्त हो जाती है। फिल्मों की आध्यात्मिक और रोमांटिक कव्वालियां भी खूब पंसद की जाती हैं।

–देवी सिंह नरूका,
वरिष्ठ लेखक व पत्रकार

शिक्षा का उद्देश्य समाज और राष्ट्र का उत्थान : न्यायमूर्ति पंकज मित्थल

- **राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय जोधपुर का दीक्षांत समारोह आयोजित**

जोधपुर, (कास)। राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर का पन्द्रहवां दीक्षांत समारोह रविवार को विश्वविद्यालय प्रांगण में राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति न्यायमूर्ति पंकज मित्थल, अकादमिक समिति, कार्यकारी समिति, साधारण सभा एवं उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की उपस्थिति में आयोजित किया गया।

समारोह में विश्वविद्यालय द्वारा एक सौ ग्यारह स्नातक उपाधियां, 47 विधि स्नातकोत्तर उपाधियां, विधि क्षेत्र में 3 पी.एच.डी. उपाधियां तथा 18 विद्यार्थियों को एम.बी.ए. (बीमा) उपाधियां प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त विभिन्न पाठ्यक्रमों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 22 विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल प्रदान किये गये। राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश मित्थल ने इस अवसर पर अपने संबोधन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की उक्ति "युवा बदलाव के एजेंट हैं" को उद्धृत करते हुए कहा कि हमारे आस-पास की दुनिया इतनी तेजी से बदल रही है कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते। हम जैसे पुराने अनुभवी को युवा शक्ति की भागीदारी की आवश्यकता है, जो अंधेरे आकाश में उल्कापिंड की तरह चमक रहे हैं।

उन्होंने कहा कि राष्ट्र ही नहीं वरन् पूरा विश्व युवाओं को इस अनिश्चित समय में परिवर्तन के दूत के रूप में देख रहा है। उन्होंने कहा कि विधि क्षेत्र एक कुलीन पेशा है, जिसकी नींव हमारी महान परम्पराओं पर टिकी है। यह न तो व्यापार है, न वाणिज्य और न ही स्वयं की खोज, यह उस कल्याणकारी राज्य की बड़ी योजना का हिस्सा है, जिसका हम अनुमोदन करते है। उन्होंने समस्त छात्रों से आव्हानमूलक संदेश दिया कि अपने मूल्यों पर कभी समझौता नहीं करना चाहिए एवं कार्यक्षेत्र में प्रगति के लिए निरन्तर प्रयासरत रहना चाहिए।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. पूनम सक्सेना ने भारत के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस ड. डी. वाई. चन्द्रचूड़ द्वारा प्रेषित संदेश का वाचन किया। संदेश में 2022 सत्र में उपाधियां लेने वाले विश्वविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों एवं उनके परिजनों को शुभकामनाएं प्रेषित की। उन्होंने अपने संदेश में छात्रों द्वारा आयोजित किये जाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम 'एन.एच 65' तथा खेलकूद कार्यक्रम "युवर्धा" का ज़िक्र करते हुए लिखा कि छात्रों ने वाले समस्त विद्यार्थी विधि विश्वविद्यालय प्रांगण में व्यतीत किये गये समय को अवश्य याद रखेंगे।

राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, जोधपुर के पास विधि क्षेत्र के शिक्षकों का श्रेष्ठ समूह है, जिन्होंने छात्रों को अध्ययन के दौरान मार्गदर्शन दिया। उन्होंने अपने शुभकामना संदेश में लिखा की जीवनयात्रा न तो तेज दौड़ है, न ही मैराथन दौड़, यह यात्रा किसी और द्वारा तय की हुई नहीं है, यह स्वयं की अनूठी यात्रा है, जिसमें उत्थान एवं पतन दोनों का सामना करना होगा जिसमें अदम्य विश्वास से निरन्तर आगे बढ़ना होगा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम सक्सेना ने विश्वविद्यालय की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट पेश करते हुए अपने स्वागत भाषण दिया। कुलसचिव वंदना सिंघवी ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। संचालन डॉ. रश्मि माथुर ने किया।

दीक्षांत समारोह में हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश पंकज मित्थल ने मैडल व उपाधियां प्रदान की।

सिलाई केंद्र का अमेरिका के प्रतिनिधियों ने किया अवलोकन

निवाई, (निसं)। उपखंड क्षेत्र के ग्राम रजवास में कल्प संस्था एवं देसाई फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित सिलाई केंद्र का रविवार को अमेरिका के प्रतिनिधियों ने निरीक्षण किया।

सेंटर की संचालिका शिवानी गौतम रजवास ने बताया कि सेंटर पर लगभग 100 से अधिक लड़कियों ने विभिन्न डिजाइन के वस्त्र बनाना सीखा है। अमेरिका के प्रतिनिधियों का सेंटर पर भारतीय संस्कृति के अनुसार तिलक लगाकर और माला पहनाकर स्वागत किया एवं उनका राजस्थानी लोक नृत्य एवं रंगोली सजाकर स्वागत किया। सेंटर पर बनाए गए वस्त्रों को दिखाया गया, जिनको देखकर वे अत्यंत प्रसन्न हुए। अतिथियों ने सेंटर पर प्रशिक्षण लेने वाली लड़कियों से भविष्य की योजनाओं के बारे में पूछा तथा सेंटर से उनको मिलने वाले प्रशिक्षण और रोजगार के बारे में जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान ब्लॉक कोऑर्डिनेटर मुकेश शर्मा, संस्था के राजस्थान क्षेत्र प्रतिनिधि सुप्रिया शर्मा और राकेश चौहान ने केंद्र पर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली लड़कियों और निरीक्षण टीम के मध्यस्थ और द्विभाषी का काम किया। गौतम ने बताया कि विदेशी मेहमानों को धागों से बनी आकर्षक कलाकृति स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट की गई। इस अवसर पर सेंटर की कविता चौधरी, प्रीतिबाला जैन, किरण नायक, इंद्रा चौधरी, अनुपमा शर्मा, खुशबू शर्मा, सीमा बैरवा सहित कई लड़कियां व महिलाएं मौजूद थी। विजिट के बाद टीम ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रजवास के विद्यार्थियों से भी बातचीत की और उनके भावी जीवन के लक्ष्यों के बारे में जानकारी लेते हुए विद्यालय की व्यवस्थाओं और शिक्षण के तरीकों पर चर्चा की। निरीक्षण के दौरान उनके साथ विद्यालय के व्याख्याता मनीष अग्रवाल, रमेश कुमार जाट, शिक्षक प्रेमप्रकाश शर्मा, श्रवण लाल जाट, मोहनलाल निराला, हेमराज वर्मा, उमाशंकर सहित कई लोग मौजूद थे।

बदबूदार पानी पीने को मजबूर हैं लोग

- **पिछले एक माह से सप्लाई मे गंदा पानी आ रहा है**
- **वार्डवासियों द्वारा पीएचडी विभाग को अवगत करा दिया है**

सूरजगढ़, (निसं)। बुहाना रेलवे फाटक के पास स्थित शहीद भगत सिंह कॉलोनी में वार्डवासी गंदा व बदबूदार पानी पीने को मजबूर हैं। पिछले एक माह से सप्लाई मे गंदा पानी आ रहा है। वार्डवासियों द्वारा पीएचईडी विभाग को अवगत करा दिया जा है। लेकिन इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वार्ड निवासी जगदेव सिंह खरड़िया ने कहा कि वार्ड में पिछले एक माह से गंदे पानी की समस्या है। पीएचईडी विभाग के अधिकारियों को कई बार लिखित व मौखिक कहा जा चुका है। विभाग में जाकर अधिकारियों को दूषित पानी के नमूने दिखाए। लेकिन अधिकारी सुनने को तैयार नहीं हैं। गंदे व बदबूदार पानी की आपूर्ति से वार्डवासियों के सामने गंभीर बीमारियां फैलने का डर बना हुआ है। वहीं मजबूरी में पशुओं को भी गंदा पानी पिलाने को मजबूर हैं। पूर्व पार्षद बाबूलाल चेतीवाल ने कहा कि कि गंदा पानी पीने से बीमार पड़ने पर कौन जिम्मेदार होगा। वार्ड के लोगों की दो दिन में पेयजल व्यवस्था को विभाग दुरुस्त करें। अन्यथा विभाग के सामने प्रदर्शन किया जाएगा। मामले को लेकर पीएचईडी के एईएन नूतन प्रकाश से संपर्क करने का प्रयास किया गया लेकिन संपर्क नहीं हुआ।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 16 जनवरी, 2023

माघ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, स्वाती नक्षत्र सांय 7:33 तक, धृति योग दिन 10:31 तक, तैतिल करण प्रातः 7:23 तक, चन्द्रमा तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मकर, चन्द्रमा–तुला, मंगल–वृष, बुध–धनु, गुरू–मीन, शुक्र–मकर, शनि–मकर, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज यमघट योग रात्रि 7:23 से सूर्योदय तक है। कुमार योग रात्रि 7:23 से आरम्भ होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:40 तक, शुभ 9:59 से 11:18 तक, चर 1:55 से 3:14 तक, लाभ-अमृत 3:14 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:33, सूर्यास्त 5:51

मेष – व्यावसायिक कार्यों से संबंधित संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

वृष – अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन – व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क – घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में चल रहे वाद-विवाद समाप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

सिंह – परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कन्या – परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला – व्यावसायिक कार्यों में अनावश्यक बाधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक – घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। धार्मिक कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। मित्रों से आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं।

धनु – आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। आज के नवीन स्त्रोत सामने आयेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर – व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कुंभ – व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

मीन – अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। अनावश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।